❋ 28 मई 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ❋

❋ ज्ञान-

1] ओम् शान्ति का अर्थ क्या है? स्वधर्म में बैठो या अपने को आत्मा समझ बैठो तो शान्त में बैठेंगे। इसको कहा जाता है स्वधर्म में बैठना। भगवानुवाच– स्वधर्म में बैठो।

2] यह तुम्हारा है सर्वोत्तम कुल, देवताओं से भी उत्तम क्योंकि तुमको पढ़ाने वाला, मनुष्य से देवता बनाने वाला बाप आया है। बच्चों को बैठ समझाते हैं क्योंकि भक्ति मार्ग वाले यहाँ आते ही नहीं हैं, यहाँ आते हैं ज्ञान मार्ग वाले। तुम आते हो बेहद के बाप से भक्ति का फल लेने।

3] अब भक्ति का फल कौन लेंगे? जिसने सबसे जास्ती भक्ति की होगी, वही पत्थर से पारसबुद्धि बनते हैं। वही आकर ज्ञान लेंगे क्योंकि भक्ति का फल भगवान् को ही आकार देना है। यह अच्छी रीति समझने की बातें हैं।

4] भगवानुवाच, परन्तु भगवान् किसको कहा जाता है, भगवान् तो एक होता है। भगवान् कोई सैकड़ों-हज़ारों नहीं होते हैं। मिट्टी-पत्थर में नहीं होते हैं। बाप को न जानने कारण भारत कितना कंगाल बन पड़ा है।

5] जब इन देवी-देवताओं की राजधानी थी, सूर्यवंशी और चन्द्रवंशी थे तब और कोई धर्म नहीं था। इस समय फिर और सब धर्म हैं। यह धर्म है नहीं। यह जो फाऊन्डेशन है, जिसको थुर कहा जाता है। इस समय मनुष्य सृष्टि रूपी झाड़ का थुर सारा जल गया है। बाकी सब खड़े हैं। अब उन सबकी आयु पूरी होती है। यह मनुष्य सृष्टि रूपी वैराइटी झाड़ है। भिन्न नाम, रूप, देश, काल, अनेकानेक हैं ना। कितना बड़ा झाड़ है।

6] उत्तम ते उत्तम पुरूष वा ऊंच ते ऊंच गाया जाता है एक भगवान्। ऊंचा तेरा नाम ऊंचा तेरा धाम। ऊंचे ते ऊंच रहते हैं ना परमधाम में। यह बड़ा सहज समझने का है। सतयुग, त्रेता, द्वापर, कलियुग फिर है संगमयुग।

7] बाप के सिवाए और तो कोई भी सद्गति दाता हो नहीं सकता। न किसको श्री कह सकतें हैं, न श्री श्री। श्री अर्थात् श्रेष्ठ होते हैं देवतायें। श्री लक्ष्मी, श्री नारायण उनको कहा जाता है। उन्हों को बनाने वाला कौ? श्री श्री शिवबाबा को ही कहना चाहिए।

8] तो बाप समझाते हैं– यह भी ड्रामा बना हुआ है। एक्टर्स होकर ड्रामा के क्रियेटर, डारेक्टर, मुख्य एक्टर को न जानें तो क्या कहेंगे ! बाप कहते हैं इस बेहद के ड्रामा को कोई भी मनुष्य मात्र नहीं जानते हैं। यह बाप आकर समझाते हैं। कहते भी हैं शरीर लेकर पार्ट बजाते हैं, तो नाटक हुआ ना। नाटक के मुख्य एक्टर्स कौन हैं ? कोई बता नहीं सकेंगे।

9] एक शिव की भक्ति करना– इसको कहा जाता है अव्यभिचारी भक्ति। फिर बहुतों की भक्ति करते व्यभिचारी बन पड़ते है।

❋ योग-

1] जैसा कर्म वैसे स्वरूप की स्मृति इमर्ज रूप में अनुभव करो तो बहुत विचित्र खुशी, विचित्र प्राप्तियों का भण्डार बन जायेंगे और दिल से याही अनहद गीत निकलेगा कि पाना था सो पा लिया।

❋ धारणा-

1] हे मीठे बच्चों, अगर इस जन्म में ब्राह्मण बनकर काम पर जीत पहनी तो जगत जीत बनेंगे। तुम पवित्रता धारण करते हो देवता बनने के लिए।

❋ सेवा-

1] ----